International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 363-364

डुग्गर का लोक नायक 'बावा जित्तो'

ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा'
बडाली, विजयपुर, साम्बा, जम्मू व कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

आजादी से पहले तक डुग्गर प्रदेश में सामंतवादी शक्तियों का बोल–बाला था। सारा प्रदेश छोटे–छोटे रजबाड़ो में बंटा हुआ था। जिसके चलते अलग–अलग तरीके से अलग–अलग जगहों पर रजबाड़े अपना कानून सथापित किए हुए थे। जागरीदार प्रथा होने के कारण आम लुकाई परेशान थी, उन्हें अपने काम का पूरा हक नही मिलता था। वह जगीरदारों के शोषन का शिकार हो रहे थे। लोगों को जमीनों का मालिकाना हक नही था। इसलिए उनकों फसल का आधा हिस्सा जगीरदारों को देना पढ़ता था। ताके वह उन्हे काम से नां निकालें। इस लेख के माध्यम से डुग्गर प्रदेश में चली आ रही इस प्रथा के कारण शामे चक्क की आम लुकाई परेशान थी। शोषन वर्ग और शोषक वर्ग के दरमियान संघर्ष का बिगुल सबसे पहले डुग्गर के लोक नायक बावा जित्तो ने बजाया था।

डुग्गर प्रदेश का लोक नायक बावा जित्तो एक ऐसा नायक था जिसने सबसे पहले सांमतबादी शक्तियों के खिलाफ आबाज बुलंद की थी। वह जम्मू कश्मीर में स्थित ग्हारा ग्रांम का रहने बाला ब्राह्मन जाति से संबंध रखता था। वह करसानी से ही अपना गुजर–बसर करता था। वह बहुत मेहनती और इमानदार किसान था। माता बैष्णवी का सच्चा भगत था। इसका प्रमाण हमें डोगरी नाटक 'बावा जित्तो' के इन वाक्यों से मिलता है।'' वह माता बेष्णवी के पहाड़ की तरफ देखकर, हे बेष्णवी मां, यह खिलौना (बुआ गौरी) मुझे आप ने ही दिया है। इसे जन्म देकर इसकी माँ को तो तुने अपने पास बुला लिया है। यह अपनी माँ की एक ही निशानी है और मेरी भी। तुने हमेशा इसके सिर पर अपना हाथ रखा है।''[1] उसकी पत्नी माया के देहांत के बाद 7–8 वर्ष की उसकी बेटी बुआ गौरी की देख–बाल का जिम्मा भी उसी के सिर आ जाता है। वह मेहनत मंजूरी करके अपना बेटी और अपनी गौरी का पेट पाल रहा था लेकिन उसके शरीकों से सहा न गया। उसकी चाची का नाम जोजां था, और उसके सात पुत्र थे, वह सभी बेकार और निखट्टु थे। जमीन का बटबारा दो हिस्सो में होना था इसलिए एक हिस्सा बावा जित्तो को मिला, बाकी दूसरा हिस्सा उसकी चाची जोजां को मिला। लेकिन उसकी चाची इससे खुश नहीं थी वह जमीन के अपने 7 पुत्रों समेत 8 हिस्से करना चाहती थी। जिसके चलते वह बावा जित्तो और उसकी बेटी गौरी को बड़ा तंग करती थी। बावा जित्तो यह सब सहते इमानदारी से अपने काम में लगा रहता। लेकिन जोजां को यह बात पची नहीं। वह नए–नए तरीकों से उसको तंग करने की योजनाएं बनाती रहती ताकै वह दुखी होकर उसकी बात मान ले। नाटक में गारड़ी (सूत्रधार) द्वारा कहे गए वाक्य जोजां की जित्तो के प्रति मानसिकता को दर्शाते हैं।''

दुनियां में महाभारत मचा है, हो रही जगह–जगह लड़ाई,
भले को बुरे जीने नही देते, भले की कोई सुनता नाही।
ग्हार ग्राम में वही कहानी, दुखी हुई चंगेआई,
सगी चाची पीछे पड़ गेई, रोज जुल्म की रफतार बड़ाई।
सातों पुत्र मूढ–घमंड़ी, सोच समझ ना कोई,
एक ही हठ था नाम जित्तो का, देंगे हम मिटा,
पास से सब डरते देखो, कैसी कायरता आई।
एक ही जोत दिए की जलती, सब ओर अंधेरी छाई।'' [2]

एक दिन उसने अपने पुत्रों से कहकर उसको मरवाने का षड़यंत्र रचा। मौका पाकर उन्होने बावा जित्तो को पहाड़ी से नीचे गिरा दिया बड़ी मुश्किल से वह जान बचा सका, फिर उसने पंचायत बुलाकर इंसाफ मागने की कोशिष की लेकिन पंचायत के फैसले ने उसको अंदर से हिला दिया। जब पंचायत ने कहा,'' जित्तो आपकी जमीन के बटबारे की कोई लिखत नही हुई थी। इसलिए उस बटबारे को सेही नही समझा जा सकता। आपके इस झगड़े को मिटाने का एक ही रास्ता है, के सारी जमीन का बटवारा दुबारा हो। आप आठ भाई हो और जमीन के हिस्से बी आठ हों।''[3]

पंचायत के फैसले के अनुसार उसको जमीन का आठबां हिस्सा दिया जाना था। लेकिन वह इससे सेहमत नही था। पंचायत से मिले अन्याय के कारण बावा जित्तो दुखी होकर ग्हार ग्राम को छोड़ कर चला जाता है। वह शामा चक्क में स्थित एक ग्राम में, यहां उसका मित्र रूलो लोहार रहता था वहां उसके पास चला जाता है। रहने के लिए घर नही था, खाने के लिए काम नही था, लेकिन वह फिर बी अपने इमान से नहीं डोलता। रूलो लोहार अपनी मित्रता निभाते हुए उसको रहने के लिए घर देता है, और जगीरदार मैह्ता बीरसिंह के पास जाकर खेती करने के लिए एक किल्ला बंजर जमीन बी दिलवा देता है। ईसो जो जंगल की रखबाली करता था, बावा जित्तो का हिस्सेदार बनता है। वहुत ही बंजर और सखत जमीन होने के कारण ही मैह्ता वीरसिंह आधें हिस्से की जगह पर बावा जित्तो से एक चौथाई हिस्सा लेने का करार करता है। मैह्ता का कारमुख्तार वहसीयत को सुनाते हुए कहता है, '' इस इलाके में जगीरदार श्री मैह्ता बीरसिंह के हुकम मुताबिक लिखत लिखी गेई जिसमें शामचक्क वाली पूर्व की तरफ जो बंजर जमीन (जाड़) है। वह ग्हार से आए हुए बावा जित्तो को खेती करने के लिए मंजूर की जाती है। इस जगीर में सामियों से आधी फसल लेने का नियम है पर मैह्ता ने जित्तो को यहां एक रियासत यह दी है के वह उनको फसल का चौथा हिस्सा ही दिया करेगा।''[4]

बावा जित्तो और ईसो दोनो मिल कर बेजोड़ मेहनत करके जंगल को खेती लायक बना देते हैं। और गेहूं बीज देते हैं। वहां पे सोने

की तरह चमकती हुई गेहूं देखकर सारे इलाके में दुहाई मच जाती है। इस बात का पता जब वीरसिंह को चलता है, तो वह भी गेहूं देखने वहां आता है। और उसके मन में बेइमानी घर कर जाती है क्योंकि इतनी अच्छी फसल उसने जिंदगी में पहले कभी नही देखी थी। जब गेहूं पककर काट ली जाती है तो मैह्ता वीरसिंह हिस्सा लेने वहां आता है और बावा जित्तो को वहां न पाकर आधी गेहूं भरने का अपने आदमियों को आदेश देता है,'' आप ने सुना नही ? जाओ, सारी गेहूं भर लो। हम देखतें है कौन रोकता है आपको''[5]। ईसो के बार–बार कहने पर वह उसको मारकर बांध देते हैं। जब यह बात बावा जित्तो को पता चलती है तो वह आग बबूला होकर हाथ में कटार लिए वहां पहुंच जाता है। जब वह देखता है के मैह्ता वीरसिंह जबरदस्ती सारी गेहूं भरवा रहा है तो वह वड़े विनम्रता से प्रार्थना करता है,'' मैह्ता! मैह्ता जी। धूप में क्यों खड़े हो? वहां छाया में चारपाई पर बैठ जाओ। पर पहले अपने आदमियों को रोको की वह गेहूं की भरी बोरियों को सीयें ना। और गेहूं के पास से हट जाए।'' [6] आपने ही एक चौथाई हिस्से की बात की थी लेकिन अब आप बेइमानी कर रहे हो, आप ऐसा नहीं कर सकते। यह अन्याय है। लेकिन मैह्ता वीरसिंह टस से मस नहीं हुआ। वह अपने आदमियों को कहता है के इन दोनों को पिछे हटाकर सारी गेहूं उठा ली जाए। बावा जित्तो की जब उनके सामने एक ना चली तो उसने अपना कटार निकाल कर कहा ए'' इस गेहूं में मैं अपना खून और मास मिला देता हूँ।''[7] और फिर गेहूं के ढेर के उपर चढ़ कर अपना गला काट दिया। देखते ही देखते सारी गेहूं खून से लाल हो गेई और वह गेहूं के उपर गिर गेआ। यह देखकर सब सुन्न हो गए और डर के मारे कांपने लगे। मैह्ता वीरसिंह ने उसकी लाश को वहां से हटाने का आदेश दिया और वहां से भाग गया। उसके बाद सारी जनता मैह्ता वीरसिंह को पापी कहने लगी और वह पागल सा हो गया। इस तरह डुग्गर के लोक नायक बावा जित्तो ने पहली बार सामंतवादी शक्तियों के खिलाफ एक ऐसा नारा बुलंद किया जिसके बाद इन शक्तियों के पैर थरथराने लगे। जम्मू प्रदेश में बाबा जित्तो को लोक नायक के रूप में पूजा जाता हे। ग्हार ग्राम में बावा जित्तो की प्रतिमा स्थापक की गेई है, और एक मंदिर का निर्माण किया गेया है। चिड़ी में बावा जित्तो की इस कुरर्वानी को याद करते हुए बहुत बड़ा मेला लगाया जाता है। जहां हिंदोस्तान के हर खित्ते के लोग (खास कर पंजाब) दर्शनों के लिए आते है, और अपना जीवन सफल बनाते हैं। इस लेख में जो उक्तियां दी गई है वह डोगरी नाटक बावा जित्तो से अनुदित की गई है।

संदर्भ

1. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 22
2. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 30
3. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 36
4. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 56
5. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 77
6. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 74
7. प्रो. रामनाथ शास्त्री, बावा जित्तो, सफा – 77